GISI Impact Factor 2.4620
नवम्बर-दिसम्बर 2015
वर्ष - 9 अंक - 6
ISSN 0973-9777
ijraeditor@yahoo.in

भारतीय शोध पत्रिका

# आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

www.anvikshikijournal.com

प्रकाशन
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. द्वारा आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित
अन्य सहसंयोजन
सार्कः अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका
एशियन जर्नल ऑफ मार्डन एण्ड आयुर्वेदिक मेडिकल साइंस
वाराणसी, उ०प्र० (भारत)

MPASVO

# आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका
वर्ष-9 अंक-6 नवम्बर-2015

शोध प्रपत्र

उपनिषदों के प्रमुख स्त्री विषयक उद्धरण [ज्ञान खण्ड से] -डॉ. मनीषा शुक्ला 1-10
बिलासपुर जिले के स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक भूमिका -डॉ. पी.सी. धृतलहरे 11-13

महिला उत्थान और सशक्तिकरण -रामनिवास पाण्डेय 14-17
वियोगी हरि का कवि-कीर्तन [सृजात्मक आलोचना एवं इतिहास बोध का संगम] -डॉ. विकास कुमार सिंह 18-26

कबीर का दर्शन : एक विवेचन -डॉ. सुजीत कुमार सिंह 27-29
हिन्दी कहानियों में वृद्ध विमर्श -डॉ. विजय कुमार 30-33

निराला की साहित्यिक अवधारणा : काव्य एवं गद्य -डॉ. सच्चिदानंद द्विवेदी 34-43
कर्णचरित एवं रश्मिरथी : नूतन और रमणीय काव्य -डॉ. अंशुमाला मिश्रा 44-52

खड़ी बोली कविता पर ब्रज भाषा का प्रभाव -डॉ. विभा मेहरोत्रा 53-59
21वीं सदी की पुरुष कवियों की कविताओं में चित्रित स्त्री -डॉ. राधा वर्मा 60-65

हिन्दी साहित्य की विलक्षण विधायें, वाद व शब्दावली -डॉ. रमेश टण्डन 66-70
भारतीय कृषि, कृषक एवं समाज -अरून कुमार गुप्त 71-75

समेकित कीट प्रबंधन : किसानों को जागरूक बनाने की आवश्यकता -डॉ. कुमार भारत भूषण एवं मनीष मोहन गोरे 76-78
विकास के लिये तत्पर होता बिहार -डॉ. हरिशंकर राय 79-83

"पाँचवीं अनुसूची क्षेत्र [पेसा क्षेत्र] में महिला नेतृत्व, ग्राम पंचायत बेलरगांव के विशेष संदर्भ में" -प्रकाश कुमार छाता 84-88
जनगणना 2011 के संदर्भ में भारतीय महिलाओं की स्थिति -डॉ. सिद्धार्थ पाण्डेय 89-91

संस्कारों का वैज्ञानिक योगदान [संस्कार का व्यक्तित्व विकास व आध्यात्मिक योगदान] -डॉ. कीर्ति चौधरी झा 92-96
नैसर्गिक और मानव निर्मित पर्यावरण -रामनिवास पाण्डेय 97-100

"वेदान्त" पर भाष्यकार आचार्यों के नवीन सम्प्रदाय -डॉ. तनूजा अग्रवाल 101-104
परिवर्तित पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में आर्थिक विकास -डॉ. राजेश निगम 105-108

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2015) 9,66-70
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 22 अक्टूबर 2015

# हिन्दी साहित्य की विलक्षण विधायें, वाद व शब्दावली

डॉ. रमेश टण्डन*

## *लेखक का घोषणा-पत्र*

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *हिन्दी साहित्य की विलक्षण विधायें, वाद व शब्दावली* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं रमेश टण्डन घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

## *सारांश*

समय के साथ-साथ हिन्दी साहित्य का भी विकास हुआ और समाज के अनुरूप विभिन्न प्रकार के साहित्यों का प्रचलन भी प्रारम्भ होते हुए तिरोहित होते चले गये। कभी कुछ बाद चला तो कभी कुछ। इसके अतिरिक्त कुछ विलक्षण शब्दावलियों के भी प्रयोग हुए। यहाँ हिन्दी साहित्य के सुधि पाठकों के लिए उन विलक्षण तत्वों को विश्लेषण करना एक मात्र उद्देश्य होगा जिससे साहित्य बेहतर रोचक बनने के साथ सर्व सुलभ हो एवं ज्ञेय हो।

## *रिपोर्ताज*

स्वतन्त्रता के बाद यह अस्तित्व में आया। डॉ0 विश्वम्भर नाथ उपाध्याय के अनुसार, ''रिपोर्ताज में ध्यान, धारणा, कल्पना और भाव की गति में समन्विती होती है।'' डॉ0 रामविलास शर्मा ने रिपोर्ताज की निम्नलिखित विशेषताएँ कही है- 1. वस्तुगत सत्य को प्राथमिकता देना, 2. आधार पर कोई प्रतिबन्ध न होना, 3. घटक तत्व का पाया जाना, 4. प्रभावान्विति का होना, 5 जन-जीवन से अधिकाधिक प्रीति होना।

## *आत्म कथा*

इसमें लेखक अपनी अतीत बेला को ललित शैली में प्रस्तुत करने के साथ आत्म-निरीक्षण करता है, अपने जीवन के प्रति तटस्थ रहते हुए स्वयं के दोषों को प्रकट करने में भी वह नहीं झिझकता। आत्मकथा प्रायः उत्तम पुरुष में लिखी जाती है।

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय [बरगिया] रायगढ़ (छत्तीसगढ़) भारत। E-mail : rameshktandan@gmail.com



© लेखक 2015, एम.पी.ए.एस.पी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

डॉ0 त्रिगुणायत के अनुसार इसकी तीन श्रेणियाँ है- *1. धार्मिक वृत्ति प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ*- उदाहरण के लिए, वियोगी हरि लिखित "मेरा जीवन प्रवाह", हरिभाऊ उपध्याय लिखित "साधना के पथ", 2. *राजनीति वृत्ति प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ*- उदाहरण के लिए, प0 जवाहर लाल नेहरू लिखित "मेरी कहानी", राजेन्द्र प्रसाद लिखित "मेरी आत्मकथा", *3. कलाकार के जीवन की आत्मकथाएँ*- उदाहरण के लिए, के. एम. मुन्शी कृत "स्वप्न सिद्धि की खोज", देवेन्द्र सत्यार्थी विरचित "चाँद सूरज", गुलाबराय की "हमारी असफलताएँ"।

प्रमुख आत्मकथाएँ- (लेखक) राहुल सांकृत्यायन-(कृति) मेरी जीवन यात्रा, (लेखक) यशपाल-(कृति) सिंहावलोकन, (लेखक) रामवृक्ष बेनीपुरी-(कृति) मुझे याद है, (लेखक) हरिवंश राय बच्चन-(कृति) क्या भूलूं क्या याद करूं।

### *यात्रा साहित्य*

इसका सम्बन्ध मनुष्य की यायावरी वृत्ति से है। इसके पाँच वर्गीकरण किए जा सकते हैं- 1. प्रकृति प्रेरित उद्गारों के वाहक यात्रा साहित्य, 2. विवरण प्रधान यात्रा साहित्य, 3. जीवन दर्शन के विश्लेषक यात्रा साहित्य, 4. डायरी शैली में लिखे गए यात्रा साहित्य, 5. पत्रों के रूप में यात्रा साहित्य।

इस विधा के आमुख नाम हैं- राकेश यादव, निर्मल वर्मा, स0ही0वा0 अज्ञेय।

### *रेखाचित्र*

रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम-से-कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण और सजीव अंकन है। इसकी विशेषता विस्तार में नहीं, तीव्रता में होती है। यह अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। विद्वानों ने पं0 श्रीराम शर्मा से हिन्दी रेखाचित्र के विकास का प्रारम्भ माना है।

### *संस्मरण*

स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखित लेख को संस्मरण कहते हैं। यह व्यापकता के आधार पर आत्म चरित्र के अन्तर्गत आता है तो शैली के आधार पर रेखाचित्र के समीप है। अंग्रेजी में इसे 'रेमिन्सेसे' और 'मेम्बायर्स' कहते हैं। हिन्दी में संस्मरण-लेखन का आरम्भ पद्मसिंह शर्मा के 'पद्म पराग' से माना जाता है।

### *प्रगीत*

कविता के पाँच रूपों- कथात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक, भावनात्मक तथा चित्रात्मक में से भावनात्मक (भावात्मक) के अन्तर्गत- प्रगीत व गीत आते हैं। प्रगीत को अंग्रेजी में 'लिरिक' कहा जाता है। भावात्मक होना और छोटा होना प्रगीत का प्रधान गुण है। आजकल प्रबन्ध की ओर झुकाव होने के कारण इसमें व्यक्तियों और घटनाओं की चर्चा करना अनिवार्य-सा हो गया है। प्रगीत के उदाहरण में, 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'राम की शक्ति पूजा' को ले सकते हैं।

### *गीत*

गीत की योजना में मुख्यतः चार बातों का ध्यान रखना पड़ता है- अवसर, रस, गति और राग। इसमें भावना के साथ-साथ उसकी अभिव्यक्ति भी निहित होती है। मात्रा, लय, राग, काल को ध्यान में रखते हुए गीत की रचना की जाती है। गीत के प्रमुखतः दो प्रकार हैं- प्रेम गीत, शोक गीत। पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' विरचित "सरोज-स्मृति" हिन्दी काव्य जगत का सर्वश्रेष्ठ शोक-गीत है।

*नवगीत*

नवगीत, नई कविता का गीतात्मक रूप है। इसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं- 1. वर्तमान विसंगतियों का चित्रण, 2. लोक जीवन की अभिव्यक्ति, 3. परिष्कृत सौन्दर्य बोध, 4. जन भाषा का प्रयोग, 5. लोक धुनों का प्रयोग, 6. नवीन बिम्ब योजना, 7. नवीन प्रतीक योजना, 8. नवीन उपमान योजना।

नवगीत परम्परा के सूत्रधार अज्ञेय जी हैं। इसकी पहली बार विशद चर्चा राजेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा संपादित 'गीतांगिनी' (1958) में हुई। नवगीत के जनक केदारनाथ अग्रवाल तथा ठाकुर प्रसाद सिंह या उमाकान्त मालवीय हैं, इसमें एकमत नहीं है। अन्य नवगीतकार हैं- रामदरश मिश्र, रवीन्द्र भ्रमर, वीरेन्द्र मिश्र, बालस्वरूप राही, रमेश शंकर, डॉ0 शम्भूनाथ सिंह, सोम ठाकुर इत्यादि हैं

*हाइकू*

यह जापानी कविता का एक छन्द है। यह 17 वर्णों वाला एक वर्णिक छन्द है। कुल तीन पंक्तियाँ होती हैं। प्रथम पंक्ति में 5 वर्ण, द्वितीय में 7 एवं तृतीय में पुनः 5 वर्ण होते हैं। हिन्दी में इसके कवि हुए- डॉ0 सत्यभूषण वर्मा, डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल, डॉ0 कमलेश भट्ट 'कमल', डॉ0 सुधा गुप्ता, प्रभास शर्मा।

*मिथक*

प्राचीन काल की घटनाओं पर आधारित लोक कथाओं या पुराणों में वर्णित कथाओं को मिथक कहा जाता है। इसमें जन समुदाय के धार्मिक विश्वास, सृष्टि सम्बन्धी घटनाओं, समाज की अलौकिक परम्पराओं का समावेश होता है। देवासुर संग्राम, अमृत और विष की उत्पत्ति आदि मिथक हैं। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी', धर्मवीर भारती का 'अंधा युग', नरेश मेहता की 'संशय की एक रात' मिथक आधारित ऐसी कृतियाँ हैं जिनमें आधुनिक भाव बोध को अभिव्यक्त किया गया है।

*फैन्टेसी*

फैन्टेसी का अर्थ मिथ्या कल्पना से लगाया जाता है। फैन्टेसी के चरित्र, क्रिया या परिस्थिति आदि में वे सब बातें सम्मिलित रहती हैं जो सामान्य परिस्थितियों में असम्भव समझी जाती हैं। जिसे कवि ने शुद्ध काल्पनिक रूप में बनाया और माना हो; और उसे बुद्धिमान, सयाने पाठक भी शुद्ध काल्पनिक मानते हों, फैन्टेसी है। शुद्ध विनोद के क्षेत्र में फैन्टेसी सर्वाधिक मनोरंजक है। फैन्टेसी विचित्रता का क्षेत्र है और यही विचित्रता ही इसका आकर्षण है। मानविकी कोश में इसे "स्वप्नचित्र मूलक साहित्य" कहा गया है, जिसमें असम्भाव्य सम्भावनाओं को प्राथमिकता दी जाती है। इस शब्द का निर्माण यूनानी शब्द "फैन्टेसिया" से हुआ है जिसका अर्थ है- 'मनुष्य की वह क्षमता जो सम्भाव्य संसार की सर्जना करती है'।

*प्रतीक* ; जब कोई पदार्थ किसी भाव या विचार का संकेत बन जाता है, तो वह प्रतीक कहलाता है। कबीर की रचनाओं में 'हंस', आत्मा का प्रतीक है।

*बिम्ब*

शब्दों के माध्यम से निर्मित चित्र ही बिम्ब कहलाता है। यह कल्पना निर्मित और भावगर्भित होता है। मानवेन्द्रियों को भावोन्मीलित करना ही बिम्ब का प्रमुख उद्देश्य होता है। सामान्यतया बिम्ब का अर्थ किसी पदार्थ को मूर्त रूप प्रदान किए जाने से लगाया जाता है। कल्पना के उन्मेष से कवि काव्य- बिम्ब का निर्माण करता है।

### छायावाद

''प्रेम, प्रकृति और मानव सौंदर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक सूक्ष्म अभिव्यंजना लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में जिस काव्य में होती है, वह छायावाद कहलाता है।''

द्विवेदी युग के प्रतिक्रियास्वरूप, स्थूलता, अतिशय नैतिकता, इतिवृत्तात्मकता के विरोध में इसका जन्म हुआ। इसमें अतीत गौरव की अभिव्यक्ति, स्वाधीनता की चेतना, राष्ट्रप्रेम, त्याग और बलिदान, अस्मिता की खोज दिखायी देती है। गांधीवादी जीवनमूल्यों का प्रभाव भी इसमें दिखायी देता है। प्रारम्भ में छायावाद का प्रयोग व्यंग्य रूप में अस्पष्ट कविताओं के लिए हुआ, जिनकी छाया (अर्थ) कहीं और पड़ती थी। परन्तु कालान्तर में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी।

छायावाद की विशेषताएँ; 1. स्थूलता के स्थान पर सूक्ष्मता का दृष्टिगोचर होना। 2. रहस्यवादी आवृत्ति का विद्यमान होना। 3. प्रेम, प्रकृति, सौन्दर्य का काव्य। 4. स्वानुभूति की प्रधानता। 5. अंग्रेजी की रोमांटिक काव्य धारा से प्रभावित। 6. सांस्कृतिक चेतना, मानवतावादी दृष्टिकोण की प्रमुखता।

इसके प्रमुख कवि हैं- जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला व महादेवी वर्मा

### मुक्त छन्द

हिन्दी काव्य में मुक्त छन्द का प्रवर्तन निराला ने किया। प्रारम्भ में 'रबर छन्द', 'केंचुआ छन्द' कहकर इसकी खिल्ली उड़ायी गयी। निराला के अनुसार, मुक्त छन्द से आशय अतुकान्त कविता से नहीं अपितु ''जहाँ मुक्ति रहती है, वहाँ बन्धन नहीं रहते- न मनुष्यों में, न कविता में'' है। मुक्त छन्द तो वह है जो छन्द की भूमि में रहकर भी मुक्त है।

### प्रगतिवाद

छायावाद के उपरान्त 1936 ई0 के आस-पास शोषण के विरूद्ध नयी चेतना को लेकर रचा गया साहित्य जो मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित था, प्रगतिवाद कहलाया। जो विचारधारा राजनीतिक क्षेत्र में साम्यवाद या मार्क्सवाद कहलाती है, वही साहित्यिक क्षेत्र में प्रगतिवाद कहलायी। उन दिनों गांधीवादी- अहिंसा से युवक असंतुष्ट हो रहे थे।

### प्रयोगवाद

व्यक्तिगत सुख-दुख एवं संवेदना को काव्य का सत्य मानकर नए-नए माध्यमों से अभिव्यक्त साहित्य को प्रयोगवाद कहा गया। प्रयोगवाद का सत्य मध्यमवर्गीय व्यक्ति का सत्य है। इसकी व्यष्टि चेतना 'अस्तित्ववाद' से अनुप्राणित है। इसका कवि 'क्षणवाद' पर यकीन करता है। प्रयोगवादी कविताएँ व्यक्ति केन्द्रित होती हैं। इसमें निराशा, क्षणवाद, कुण्ठा, अनास्था, पीड़ा, संत्रास, लघु-मानव की प्रतिष्ठा को अभिव्यक्ति मिली है। यह 1943 में स0 ही0 वा0 अज्ञेय जी के प्रथम तार सप्तक के माध्यम से प्रकाश में आया।

### नकेनवाद

1943 में प्रयोगवादी कविता के दो वर्ग हुए- प्रयोगशील एवं प्रयोगवादी वर्ग। प्रयोगशील वर्ग के प्रतिनिधि कवि अज्ञेय हुए एवं प्रयोगवादी वर्ग का नेतृत्व बिहार के तीन कवियों ने किया- नलिन विलोचन शर्मा, केशरीकुमार, नरेश। प्रयोग को वाद के रूप में मानते हुए इन्होंने काव्य में बेमेल, असंगत और चमत्कार युक्त शब्दों के प्रयोग पर बल दिया।

## नयी कविता

प्रयोगवाद के कारण हिन्दी कविता समाज से दूर जा पड़ी थी, नयी कविता ने हिन्दी की कविता को पुनः समाज सापेक्ष बना दिया। वस्तुतः यह 'नयी कविता' नाम प्रयोगवाद का ही दूसरा छद्म नाम था। यह छायावाद, प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद को अपने आँचल में समेटते हुए नवीन काव्य शिल्प के माध्यम से नवीन सामाजिक परिवेश में उपयुक्त जीवन मूल्य प्रस्तुत करती है।

प्रयोगवाद के विरोध में प्रयोगवाद के ही समर्थकों में सर्वप्रमुख डॉ0 जगदीश गुप्त ने सन् 1954 में प्रयोगवाद के स्थान पर ''नयी कविता'' नाम से नवीन प्रयोगवादी कवियों का अर्द्ध-वार्षिक संकलन प्रकाशित किया। प्रयोगवाद का विकास ही कालान्तर में 'नयी कविता' के रूप में हुआ। ये दोनों एक ही धारा के विकास की दो अवस्थाएँ हैं- प्रयोगवाद उस काव्य धारा की प्रारम्भिक अवस्था है और नयी कविता उसकी विकसित अवस्था। नयी कविता में विषय वस्तु की दृष्टि से जहाँ नवीनता, मुक्त यथार्थवाद, बौद्धिकता, क्षणवादी जीवन दर्शन एवं लघुमानव की प्रतिष्ठा की गई है वहीं शिल्प की दृष्टि से इसमें नवीन उपमान, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता एवं भाषा के नए प्रयोग का रूझान दिखायी पड़ता है।

## *कहानी*

1 *नयी कहानी*- नयी कविता के तर्ज पर 1950 के आस-पास इसका सूत्रपात हुआ। देश की स्वतंत्रता के बाद नयी कहानी का सूत्रपात करते हुए नयी पीढ़ी के कलाकारों ने अपनी कहानियों में असह्य सामाजिक और वैयक्तिक घुटन तथा विवशता को अभिव्यक्ति दी। इसमें स्वाधीन भारत के व्यक्ति, समाज और जीवन के विविध पक्षों को अपना प्रमुख विषय बनाकर नवीन उद्भावनाएँ प्रस्तुत की गयीं। हिन्दी कहानी को नये आयाम प्रदान किये गये। भाव और विचार दोनों का ही विस्तार हुआ। इसके प्रमुख लेखक- मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, अमर कांत, मन्नू भंडारी, श्रीकांत वर्मा इत्यादि हैं।

2 *अकहानी*- 1960 के आस-पास कुछ कथाकारों ने कहानी के स्वीकृत मूल्यों के प्रति निषेध व्यक्त करते हुए अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा की। इसके प्रवर्तक हुए- निर्मल वर्मा।

3 *साठोत्तरी कहानी*- 1960 के आस-पास संत्रास, मृत्यु, अतृप्ति आदि का अंकन उस समय की कहानियों में किया गया था। उस अंकन में अनुभूत सत्य की अपेक्षा ऊपरी आरोपण ही अधिक था। यूरोपीय साहित्य में द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त उस स्थिति के बड़े तीखे स्वर उभरे थे। हिन्दी में उसी की नकल चल पड़ी थी। ऐसी कहानियों का दौर बहुत संक्षिप्त रहा था।

4 *सचेतन कहानी*- 1964 के आस-पास महीपसिंह द्वारा प्रवर्तित सचेतन कहानी में वैचारिकता को विशेष महत्व दिया गया। इसके अन्य लेखक हैं- रामकुमार भ्रमर, बलराज पंडित, हिमांशु जोशी, सुदर्शन चोपड़ा, देवेन्द्र सत्यार्थी।

5 *समकालीन कहानी*- इसके प्रवर्तक हुए- डॉ0 गंगाप्रसाद 'विमल'। समकालीन कहानीकारों ने भावात्मक संबंधों के चित्रण-निरूपण की अपेक्षा संबंधों की विसंगति, विडम्बना, जटिलता, तनाव का बोध जगाने का प्रयत्न किया है।

6 *समानान्तर कहानी*- इसके सूत्रधार कमलेश्वर ने 1971 के आस-पास समानान्तर कहानी के रूप में निम्न वर्गीय समाज की स्थितियों, विषमताओं एवं समस्याओं का खुलकर चित्रण किया।

## संदर्भ

डॉ0 नरेन्द्र मोहन- *समकालीन कहानी की पहचान*
शुक्ल, आ0 रामचन्द्र- *हिन्दी साहित्य का इतिहास*
*मेरे द्वारा बनाए नोट्स*